DATE : / 20
PAGE No

पंडित ओमकार नाथ ठाकुर :—

पद्मश्री ओमकार नाथ ठाकुर का जन्म 24 जून सन 1897 ई० बड़ौदा राज्य के एक जहाज नामक ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम गौरी शंकर और पितामह का नाम पं० महाशंकर था। पं० ओमकार नाथ ठाकुर के पितामह और पिता पं० गौरी शंकर बड़ौदा में सरकारी नौकर थे। ओमकार के तीन भाई बालकृष्ण, रविकृष्ण, रमेश चंद्र और एक बहन पार्वती थी। बचपन में संयुक्त परिवार में परस्पर झगड़े के कारण पिता ने घर छोड़ दिया था और बच्चों और पत्नी 'झवेरबा' सहित भड़ौंच आ गई। वहाँ पर नर्मदा के किनारे कुटिया में रहकर योग साधना में लीन रहने लगे। बालक ओमकार का गला बचपन से बड़ा सुरीला था। 15 वर्ष की आयु में इनके पिता के देहान्त के बाद भड़ौंच के एक सेठ ने ओमकार नाथ की आर्थिक दृष्टि से सहायता की और उनके भाई को शिक्षा दिलवाने का सुझाव दिया। इस प्रकार ओमकार नाथ ठाकुर बंबई के गांधर्व महाविद्यालय में संगीत शिक्षा हेतु आ गए। सन 1916 ई० में पं० विष्णु दिगंबर ने पं० ओमकार नाथ ठाकुर को लाहौर के गांधर्व महाविद्यालय का प्रिंसिपल नियुक्त किया। सन 1919 ई० तक वहाँ रहे। इसके पश्चात गुरु की अनुमति लेकर भड़ौंच आ गये। उन्होंने यहाँ पर गांधर्व निकेतन नामक एक विद्यालय की स्थापना की। बाद में बंबई में संगीत निकेतन विद्यालय की स्थापना की। सन 1950 ई० में काशी हिंदु विश्वविद्यालय में संगीत विभाग का अध्यक्ष बनाया गया। इन्होंने सन 1923-24 ई० में नेपाल की यात्रा की। सन 1927 में मैसूर, बेंगलोर, हैदराबाद आदि महानगरों में अपनी कला का प्रदर्शन किया।

DATE : / 20
PAGE No.

सन् 1933 ई० मे ओमकार नाथ जी ने अपने छोटे भाई के साथ इटली के फ्लोरेंस नगर मे होने वाली अर्न्तराष्ट्रीय म्यूजिक कॉन्फ्रेंस मे भारत का प्रतिनिधित्व किया। इसके पश्चात रोम, इटली, जर्मनी आदि देशो मे अपनी कला का प्रदर्शन किया।
इनके मुख्य भजन है जोगी मत जा" 'मैं नहीं माखन खायो, तथा एक बार जोगी।
सन् 1965 ई० में पंडित जी को दुर्भाग्य से पक्षाघात की बीमारी ने घेर लिया अन्त मे दिसंबर सन् 1967 ई० मे नाद का उपासक नाद ब्रह्म मे लीन हो गया।

उस्ताद अब्दुल करीम खाँ :-->

जीवन परिचय --> उस्ताद अब्दुल करीम खां किराना के निवासी थे। आपके घराने में प्रसिद्ध गायक, सितार व सारंगी वादक हुए हैं। आपने अपने पिता श्री काले खां व चाचा अब्दुल खां से संगीत शिक्षा प्राप्त की। आप बचपन से ही बहुत अच्छा गाने लगे थे। सुना जाता है कि पहली बार इन्हें एक संगीत महफिल में पेश किया गया। उनकी उम्र केवल छः वर्ष की थी। 15वें वर्ष में प्रवेश करते-2 आपने संगीत कला में इतनी उन्नति कर ली कि आपको तत्कालीन बड़ौदा नरेश ने अपने यहाँ दरबारी गायक नियुक्त कर लिया।

भ्रमण :-> बड़ौदा में 7 वर्ष रहने के पश्चात सन 1902 ई० में प्रथम बार आप बंबई आये और फिर मिरज गये। भ्रमण के दौरान मधुर और सुरीली आवाज तथा हृदयग्राही गायकी के कारण दिन प्रतिदिन लोकप्रियता बढ़ती गई।

संगीतमय व्यक्तित्व :-> खाँ साहब गो बरहार वाणी की गायकी गाते थे। महाराष्ट्र में मींड और कण युक्त गायकी के प्रसार का श्रेय खां साहब को दिया जाता है। आपके आलापों में अखंडता व एक प्रवाह सा प्रतीत होता था। सुरीलेपन के कारण आपका संगीत अंतःकरण को स्पर्श करने की क्षमता रखता था। आपकी यह ठुमरी बहुत प्रसिद्ध हुई। इसे सुनने के लिए कला-मर्मज्ञ विशेष रूप से फरमाइश किया करते थे।

योगदान :-> सन 1913 ई० के लगभग पूना में अपने आर्यसंगीत विद्यालय की स्थापना की। विविध संगीत जलसों के द्वारा धन इकट्ठा करके आप उक्त विद्यालय को चलाते थे। गरीब विद्यार्थियों का सभी खर्च विद्यालय उठाता था। इसी विद्यालय की शाखा सन 1917 ई० में खां साहब ने बंबई में स्थापित की और तीन वर्षों तक बंबई में आपको संगीत के प्रचार प्रसार हेतु रुकना पड़ा।

शिष्य परंपरा :- आपकी शिष्य परम्परा मे प्रसिद्ध गायिका हीराबाई बड़ोदकर ने खां साहब से किराना घराने की गायकी सीखी। इनके अतिरिक्त सवाई गंधर्व, रोशन आरा बेगम आदि अनेक शिष्य और शिष्याओं द्वारा आपका नाम रोशन हुआ है।

मृत्यु :- एक बार वार्षिक उर्स के अवसर पर आप मिरज गये। कुछ लोगों के आग्रह से एक जलसे मे वहाँ से चेन्नई जाना पड़ा। वहां पर आपका एक संगीत कार्यक्रम मे गायन इतना सफल रहा कि उपस्थित जनता ने आपकी भूरि-2 प्रशंसा की। जलसा करने के लिए वहां से पांडिचेरी जाने का निश्चय किया। यात्रा मे तबियत खराब हो गई और रात्रि के 11 बजे थिंग पोयम कोलम स्टेशन पर उतर गये। बेकली बढ़ती गई कुछ देर बाद बिस्तर पर बैठ गए नमाज पढ़ी और फिर राग दरबारी कान्हड़ा से खुदा की इबादत की और 27 अक्टूबर 1937 ई० को आप हमेशा के लिए उसी बिस्तर पर लेट गये।

आगेह-

रूपक ताल :—

मात्रा → 7
विभाग → पहला विभाग 3, दूसरा व तीसरा 2-2 मात्रा का है।
ताली → पहली, चौथी और छठी पर।
खाली → किसी पर नहीं।
ताल परिचय → यह 7 मात्राओं की ताल है। जिसमे तीन विभाग है। जिनमे पहला तीन व दूसरा व तीसरा विभाग 2-2 मात्रा का होता है। पहली मात्रा को वैसे खाली माना जाता है। इसलिए पहली मात्रा पर इसका सम है। चौथी और छठी मात्रा पर ताली।

	1	2	3	4	5	6	7
एकगुन	ती	ती	ना	धी	ना	धी	ना
दुगुन	तीती	नाधी	नाधी	नाती	तीना	धीना	धीना
	X			2		3	

यह ताल मुख्य रूप से गजल, भजन, गीत व शास्त्रीय संगीत मे प्रयोग की जाती है।

झपताल :-

दोहा :-> तीन आठ वाली लगे, छः पर आवे खाली।
प्रथमहि सम दस मात्रा, धीना धि झप ताली ॥

ताल विवरण :-> यह ताल 10 मात्रा की ताल है। इस ताल मे कुल 4 विभाग है। पहला और तीसरा विभाग 2-2 मात्राओ का तथा दूसरा और चौथा विभाग 3-3 मात्राओ का होता है। इसकी प्रथम मात्रा पर सम, तीन और आठ मात्रा पर क्रमशः दूसरी और तीसरी ताली और छठी मात्रा पर खाली है। इस ताल का प्रयोग स्वतंत्र वादन मे तथा ख्याल गायकी मे भी किया जाता है।

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
एकगुन	धि	ना	धि	धि	ना	ति	ना	धि	धि	ना
दुगुन	धिना	धिधि	नाति	नाधि	धिना	धिना	धिधि	नाति	नाधि	धिना
	X		2			0		3		

DATE / 20
PAGE No.

तिलवाड़ा ताल :—

ताल विवरण :→ इस ताल मे 16 मात्राये होती है। 4-4 मात्राओं के 4 विभाग होते है। पहली मात्रा पर सम, पांचवी, तेरहवी मात्रा पर ताली तथा 9वीं मात्रा को खाली बताया जाता है। इस ताल का प्रयोग विलंबित ख्याल के साथ संगीत करने मे किया जाता है। अतः यह ताल विलंबित लय मे ही बजाई जाती है। मात्रा, ताली, खाली और विभाग आदि मे यह तीन ताल के समान है।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	तिरकिट	धि	धि	धा	धा	ति	ति	ता	तिरकिट	ति	ति	धा	धा	धि	धि
X				2				0				3			

II

1	2	3	4	5	6	7	8
धातिरकिट	धिधि	धा धा	तिति	तातिरकिट	तिति	ति	धिधि
X				2			

9	10	11	12	13	14	15	16
धातिरकिट	धिधि	धाधा	तिति	तातिरकिट	तिति	धाधा	धिधि
0				3			

Scanned with CamScanner